भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

24 सितम्बर 2018

विशाखापट्टनम के मन्यम एजेंसी इलाके में खनन माफिया सरगनाओं – सत्तारूढ़ पार्टी टी.डी.पी. के विधायक किडारि सर्वेश्वरराव और पूर्व टी.डी.पी. विधायक सीवेरी सोमा का जनता के फैसले के मुताबिक सफाया करने वाली हमारी पीएलजीए की जयजयकार! बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए दलालों के रूप में काम करते हुए, जनता और पर्यावरण के दुश्मन बनने वालों का यही होगा हश्र!

विशाखापट्टनम के मन्यम एजेंसी में खनिज संपदाओं पर अपने नजर पसारने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस देश की अपनी दलाल शासक वर्गों के बल पर मनमाने ढंग से उत्खनन और विध्वंस करते हुए लाखों आदिवासी और अन्य उत्पीड़ित जनता को विस्थापित कर रही हैं। विशाखापट्टनम के मन्यम एजेंसी में बॉक्साइट, लाटराइट, चीनी मिट्टी ... आदि खनिज संपादाओं को साम्राज्यवादियों के हवाले करने के लिए पहले से ही लुटेरी सरकारें कई समझौते (एम.ओ.यू.) करती आयी थीं। इन समझौतों के खिलाफ हमारी पार्टी – भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में आदिवासियों और उत्पीड़ित जनता जल, जंगल, जमीन और सत्ता के लिए लड़ रही है। कार्पोरेट कंपनियों के प्रवेश को रोकते हुए जुझारू जनांदोलन निर्माण कर रही है। विगत में चंद्रबाबु सरकार मन्यम एजेंसी में बॉक्साइट के उत्खनन के लिए अनुमति देते हुए, अनराक कार्पोरेट कंपनी के साथ समझौता किया था। इस समझौता के खिलाफ हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनता की जुझारू आंदोलन के दबाव में आकर टी.डी.पी. सरकार ने उस समझौते को रद्द किया। इस परिस्थिति में तात्कालिक तौर पर सरकार को 97 जी.ओ. (सरकारी आदेश) को वापस लेना पड़ा।

चंद्रबाबु सरकार ने हमारी पार्टी को चोट पहुंचाकर उसके नेतृत्व से आदिवासी जनता को वंचित रखने और मन्यम इलाके में 100 पुलिस चौकियों की स्थापना के लिए केंद्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजी एवं उनके हमले को और तेज की है। आदिवासी जनता के संघर्षरत एकता और संगठित शक्ति पर चोट पहुंचाने की साजिशें कर रही है। इसके लिए आदिवासियों के कुछ मुखिया और निम्नपूंजीपति (मध्यम) वर्ग के एक तबके को आर्थिक प्रलोभन देकर अपना दलाल बनायी है। वे लुटेरी सरकारों से और कार्पोरेट कंपनियों से विभिन्न तरह का फायदा उठाते हुए, कार्पोरेट कंपनियों के हितों के मुताबिक असत्य प्रचार के साथ जनता को गुमराह कर रहे हैं। इस तरह के दलालों में ही शामिल थे किडारी सर्वेस्वरराव और सीवेरी सोमा।

किडारि सर्वेस्वरराव का संबंध आदिवासी वाल्मिकी जनसमुदाय के मध्यम वर्ग से थे। वे उत्पादन की गतिविधियों से दूर रहते हुए, ऐसा पहचान करने लगे कि दलाली काम करने में माहिर है। क्रमशः वे उच्चजाति गैर-आदिवासी सामंती, व्यापारी और उद्योगपति वर्गों के लिए आदिवासी के बेनामी के रूप में बनकर, उन वर्गों के खदानों के मालिक के रूप में अवतार लेकर लाखों रूपये आर्जित किये है। शाषक वर्गों की दृष्टि को अपनी तरफ आकर्षित किया। वे पहले कांग्रेस में शामिल हुए। उसके बाद वाई.एस.आर. कांग्रेस के विधान परिषद सदस्य (एम.एल.सी.) के रूप में चुने गये। 2014 में अरकू चुनाव क्षेत्र से वाई.एस.आर. कांग्रेस की तरफ से चुनाव लड़कर विधायक के रूप में चुने गये। इससे हासिल सत्ता का मनमाने तरीके से इस्तेमाल कर क्रमशः उस मन्यम इलाके में खुद अपने खनन गतिविधियों को और विस्तारित कर करोड़ों रूपए आर्जित किये। उसके बाद उन्होंने अवैध रूप से आर्जित अपनी संपत्ति को बचाने के लिए काया पलट कर सत्तारूढ़ टी.डी.पी. पार्टी में शामिल हुए। इस संदर्भ में चंद्रबाबु के साथ किए गए समझौते में उन्होंने मत्री पद से भी ज्यादा खनन परियोजनाओं को विस्तारित करने हेतु सरकार के लिए समर्थन जुटाने के कार्य को महत्व दिया। इस क्रम में ही चंद्रबाबु का विश्वसनीय दलाल के रूप में उभरकर बॉक्साइट उत्खनन परियोजनाओं के लिए समर्थन जुटाया। चंद्रबाबु भी मन्यम इलाके में सर्वेस्वरराव पर निर्भर होकर, उनके खिलाफ बढ़ते आदिवासी संगठित आंदोलन पर चोट पहुंचाने के लिए सर्वेस्वरराव द्वारा अपने वाल्मिकी जनसमुदाय के जनता को बाकी आदिवासी

जनसमुदाय से अलग करने की साजिशें करवाएं। इस तरह सर्वेस्वरराव न सिर्फ शासक वर्गों के विश्वसनीय और प्रभावशाली सेवक के रूप में उभरा, बल्कि साथ-साथ जनविरोधी बनकर, अपने खनन गतिविधियों को विस्तारित करते हुए, कई लंपट युवाओं को वेतन देकर, उन्हें अपनी निजी सेना के रूप में संगठित कर, उससे अपनी अवैध उत्खनन का विरोध करने वाली जनता पर क्रूर हमले करते हुए सरकार के बल पर माइनिंग माफिया के रूप में उभरा। इनके माइनिंग माफिया गतिविधियों का विरोध करते हुए हमारी पार्टी ने पहले भी कई चेतावानी दी थी। इसके बावजूद उन्होंने अपनी माफिया गतिविधियों को थोड़ा सा भी कम करने के बजाए उसे और भी बढ़ा दी।

सीवेरी सोमा का संबंध डुंबरीगुड़ा मंडल के आदिवासी कोंडादोरा जनसमुदाय से था। वह भी शासक वर्ग का दलाल के रूप में उभरकर, 2009 में टी.डी.पी. विधायक रूप में चुने गये। 2014 के विधान सभा चुनावों में अरकू चुनाव क्षेत्र से लड़कर, सर्वेस्वरराव (वाई.एस.आर. कांग्रेस) के हाथों हार गये। इसके बावजूद, उन्हें चंद्रबाबु ने सत्तारूढ़ टी. डी.पी. के एस.टी. सेल के राज्य स्तर के नेता के रूप में, अरकू चुनाव क्षेत्र के पार्टी प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी सौंप दी। इस क्रम में ही वे कई खदानों का मालिक बन गये। मन्यम इलाके में बॉक्साइट उत्खनन के विरोध में व्यापक जनांदोलन के खिलाफ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मजबूत समर्थक के रूप में खड़े थे। डुंबरीगुड़ा मंडल में चीनी मिट्टी के उत्खनन के पक्ष में दलाल के रूप में उभरने के वजह से उस इलाके की जनता ने सोमा को पत्थरों और चप्पलों से मार भगाया था। जनता के प्रतिरोध के वजह से चीनी मिट्टी का उत्खनन रुक गया। तब से लेकर वे सरकार की पुलिस सुरक्षा में रह रहे थे।

सर्वेस्वरराव वाई.एस.आर. कांग्रेस से टी.डी.पी. में शामिल होने के बाद से ये दोनों सहअपराधी के रूप में बनकर, कार्पोरेटों और गैर-आदिवासी लुटेरे वर्गों के विश्वसनीय दलालों के रूप में उभर कर आए। उन्होंने अपने जनसमुदायों से कुछ लोगों को पूरे आदिवासी समाज से अलग कर आदिवासी जनता की एकता पर चोट पहुंचाने का प्रयास किये। उन्हें पूरे आदिवासी लोगों के खिलाफ, शोषक-शासक वर्गों और अवैध माइनिंग के अनुकूल बनाने के लिए कई तरह के प्रलोभन दिए। लुटेरे वर्गों के लिए उत्पीड़ित जनता से अलग कर एक मजबूत सामाजिक आधार बनाने के प्रयास किये। टी.डी.पी. सरकार ने बोया वाल्मिकी (मैदान इलाके का एक अन्य पिछड़ी जाति का समुदाय - ओ.बी.सी.) लोगों को आदिवासियों में शामिल करने के अपने प्रस्ताव को बाकी सभी आदिवासी समाज एकसुर में विरोध करने के बावजूद, उन्होंने अपनी सरकार के रवैये का समर्थन करते हुए पूरे आदिवासी जनता के खिलाफ खड़े हुए। दूसरी तरफ उन्होंने मन्यम इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन पर चोट पहुंचाने के लिए चंद्रबाबु सरकार की साजिशों के तहत, सशस्त्र पुलिस की सुरक्षा में आंदोलन के मजबूत गांवों में सरकारी झूठी सुधारों को अमल करते हुए, आंदोलन से जनता को अलग करने और उनके अंदर आतंक पैदा करने .... जैसे प्रतिक्रियावादी गतिविधियों में लिप्त हुए।

पिछले कुछ समय से इनकी माइनिंग माफिया गतिविधियों के खिलाफ पार्टी जनता के बीच प्रचार करती आयी है। इनके खिलाफ जनता के आंदालन को समर्थन देती आयी है और कुछ जगहों पर अपने जनसंगठनों के जरिए नेतृत्व प्रदान की है। इसके बावजूद, सरकारी सशस्त्र बलों के आधार पर इनकी गतिविधियां विस्तारित होती गयी। इस परिस्थिति में मन्यम इलाके के आदिवासी जनता की अस्तित्व और हितों के लिए, उनके फैसले के मुताबिक हमारी पीएलजीए ने इन दोनों का सफाया किया। इनकी सुरक्षा में लगे पुलिसकर्मी काबू में आने के वजह से उनपर किसी तरह का चोट पहुंचाये बिना उनके उनसे हथियार जब्त कर छोड़ दिया गया।

आज शासक वर्गों के पार्टियों द्वारा इस तरह के जनविरोधी दलालों, सामंती और बड़े पूंजीपतियों के संपदाओं को बढ़ाना ही देश के विकास के रूप में और जी.डी.पी. के विकास के रूप में ढिंढोरा पीटा जा रहा है। आज 'देश का मतलब जनता' कहावत को उलट कर 'देश का मतलब सामंतियों, दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों, भू-माफिया, शराब माफिया, माइनिंग माफिया, गुण्डें, धोखेबाजों' के रूप में बदल गया है। यही लोग लोकसभा, विधानसभा के चुनावों में जीत कर 'जनप्रतिनिधियों' के रूप में 'विकासपुरुषों' के रूप में, 'देश के रक्षकों' के रूप में अवतार ले रहे हैं। दरअसल, ये लोग देश के हितों को साम्राज्यवादियों के पास गिरवी रखकर, अपना खजाना भरते हुए, जनदुश्मन और देशद्रोही बनकर इस देश के विकास को रोक रहे हैं। देश में जनवादी क्रांति को रोक रहे हैं। ये लोग आज तेलंगाना में विशेषकर टी.आर.एस. के परदे में, भाजपा, कांग्रेस और टीडीपी के पर्दों के पीछे चुनाव के अखाड़े में कूदकर जनता के सामने आ रहे हैं। इनके साथ-साथ वामपंथी पार्टियां भी इसी चुनावी अखाड़े में शामिल होकर देश में यथास्थिति को बनाये रखने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। इन संसदीय पार्टियों के पर्दे में रहने वाले लुटेरों, देशद्रोहियों और जनविरोधियों के असली चेहरे को जनता अवश्य ही पहचान लेगी और उनका हश्र एओबी में सर्वेस्वरराव और सोमा जैसा ही होगा। आज देश में विशेषकर तेलंगाना राज्य में सभी संपदाओं को साम्राज्यवादियों के हवाले करते हुए, जनता पर ब्राह्मणीय फासीवाद लागू कर रहे टीआरएस और भाजपा के मुख्य नेताओं को हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनता अवश्य ही उचित सजा देगी।

आज तेलंगाना में फिर से विधान सभा चुनाव सामने आया हैं। इस अवसर पर ये सभी लुटेरें जनता पर अपना शोषण और उत्पीड़न जारी रखने का अधिकार पाने के लिए जनता के सामने आ रहे हैं। जनता का फैसला चाह रहे हैं। इसलिए हम जनता को आह्वान करते हैं कि आज जनता के सामने आये इन झूठे चुनावों का बहिष्कार करते हुए, देश में नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए जनयुद्ध में शामिल हो जाये। आईये, चुनाव प्रचार के लिए आने वाले टीआरएस और भाजपा नेताओं को मार भगाये। कांग्रेस, टीडीपी और वामपंथी आदि पार्टियों के जनविरोधी चरित्र का भण्डाफोड़ करते हुए जनता के बीच बेनकाब करें।

सर्वेस्वरराव और सोमा जैसे कई जालिम व जनविरोधी संसदीय प्रतिनिधियों को एपी और तेलंगाना में ही नहीं, आज देशभर में देखा जा सकता है। कई तरह के कपटतापूर्ण तरीकें अपनाकर विधानसभा और लोकसभा में जीतने के बाद, देश की संसाधनों को लूटने में और कार्पोरेट घरानों के दलालों के रूप में उभरकर देशद्रोही और जनविरोधियों के रूप में आगे आते हुए 'खादी-भगवा' नेताओं का अवतार ले रहे हैं। इस तरह के तत्वों को चुनावों में जनता कड़ी सबक सिखाना चाहिए। जनता के फैसले के मुताबिक इस तरह के तत्वों को कठिन सजा देना चाहिए।

विगत 15 सालों में दलाल शासक वर्ग देश के आंध्रप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, पश्चिम बंग, तमिलनाडु, केरलम आदि राज्यों में प्राकृतिक संसाधनों और जंगलों को बड़े कार्पोरेट वर्गों को किस तरह हवाले करते आ रहे हैं यह जगजाहिर है। विधानसभा और लोकसभा में आदिवासी इलाकों के प्रतिनिधियों के रूप में अवतार लिए हुए या इस होड़ में शामिल कोई भी दरअसल जनविरोधी ही है। सर्वेस्वरराव और सोमा की सजाएं और एक बार यह स्पष्ट करती हैं कि इस तरह के कोई भी नेता को जनता, जनसेना-पीएलजीए कभी नहीं बक्शेगी। साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हितों को पूरा करने वाले दलाल शासक वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली संसदीय पार्टियां और उनके नेता देशभर में आदिवासियों के अस्तित्व और आजीविका के लिए गंभीर खतरा बन गए हैं। हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) देश के उत्पीड़ित जनता को आह्वान करती है कि इस तरह के दलाल पार्टियों और नेताओं को मार भगाइएं! उन पार्टियों के नेतृत्व में चलने वाली दलाल सरकारों के खिलाफ जुझारू जनांदोलनों का निर्माण करें!

अ/21

अभय
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)